शेख़ फ़रीद – सबद ७६
फरीदा किथै तैडे मापिआ जिन्ही तू जणिओहि ॥
सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८१

फरीदा किथै तैडे मापिआ जिन्ही तू जणिओहि ॥
तै पासहु ओइ लदि गए तूं अजै न पतीणोहि ॥७३॥

सार: 'फ़ीनिक्स प्रभाव' तबाही की उस रूपांतरणकारी शक्ति को दर्शाता है जिससे नई शुरुआत जन्म लेती है। यह अवधारणा, पौराणिक पक्षी फ़ीनिक्स से प्रेरित है जो अपनी ही राख से पुनः उठ खड़ा होता है, मुश्किलों से उपजी शक्ति और नुक़सान से मिली स्पष्टता का प्रतीक बनकर। जब हमारे माता-पिता, जो हमें जन्म देते और पालन-पोषण करते हैं, इस दुनिया से विदा होते हैं तब स्थायित्व का भ्रम टूट जाता है और हमारी अपनी नश्वरता सामने आ खड़ी होती है। जो एहसास कभी दूर और अमूर्त लगता था, वह अचानक एक सजीव सत्य बन जाता है। यह बोध जीवन को एक साथ नाज़ुक और अत्यंत मूल्यवान बना देता है। यह हमें उन पीढ़ियों की विरासत और प्रवाह को स्वीकार करने के लिए प्रेरित करता है जो हमें आगे बढ़ाती हैं और साथ ही हर पल को कृतज्ञता के साथ संजो कर जीने की याद दिलाता है।

फरीदा किथै तैडे मापिआ जिन्ही तू जणिओहि ॥
फ़रीद पूछते हैं कि तुम्हारे माता-पिता कहाँ हैं, जिन्होंने तुम्हें जन्म दिया? यह सवाल इस सच्चाई को और गहरा करता है कि अगर हमारे जन्मदाता और पालने-पोसने वाले चले गए हैं तब हमें भी समय की अनिवार्यता और अपनी मौत का सामना करना होगा।

तै पासहु ओइ लदि गए तूं अजै न पतीणोहि ॥७३॥
वह तुम्हारा साथ छोड़ चुके हैं लेकिन तुम अभी भी यक़ीन नहीं कर पा रहे हो। यह दिखाता है कि क्षति अनुभव करने के बाद भी, मन को नश्वरता को स्वीकार करने में मुश्किल होती है। (७३)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद स्थायित्व के भ्रम को उजागर करते हैं, जो एक सुकून देने वाला विश्वास है कि हमारे पास अभी जो कुछ है, हमारे रिश्ते, सेहत, आराम और पहचान, वह वैसे ही रहेंगे। यह सोच पल भर के पलों को स्थिरता की झूठी भावना में बदल देती है जिससे हम विकास के लिए ज़रूरी भीतरी काम टाल देते हैं। ऐसे जीने से जैसे हमारे पास सदा ज़्यादा समय होगा, हम वह खोने का ख़तरा उठाते हैं जो वर्तमान में सच में मूल्यवान है। यह पहचानना ज़रूरी है कि बदलाव आवश्यक है और समय रहते हमें अपनी व्यक्तिगत विकास की यात्रा शुरू कर देनी चाहिए।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com